Shri Sant Gadge Baba Hindi Mahavidyalaya, Bhusawal

Mr. ANUPAM R. SHARMA

Assistant Professor, Shri Sant Gadge Baba Hindi Mahavidyalaya, BHUSAWAL, Dist. Jalgaon

Papers Published in Journal

Sr. No.	Name of Author	First Author or Second	Title of Paper	ISSN No.	Impact Factor Name and Marks	Publisher	National / International	Whether UGC Approved Yes /No	Whether Peer Reviewed Yes /No	Month and Year of Publication	Issue / Volume	Direct Link to Download
2022-23		Nil										
2021-22		Nil										
2020-21		Nil										
2019-20												
1	Anupam R. Sharma	First Author - Single Author	**महात्मा गांधी का राष्ट्रीय आंदोलन में योगदान १९१५-१९२० (खिलाफत एवं असहयोग आंदोलन के विशेष संदर्भ में)**	2348-7143	SJIF 6.625	Research Jouney, International Multidisciplinary E-Research Journal	International	No	Yes	Feb. 2020.	Special Issue 224 (E)	
2018-19		Nil										

Impact Factor – 6.625 ISSN – 2348-7143

INTERNATIONAL RESEARCH FELLOWS ASSOCIATION'S

RESEARCH JOURNEY

International Multidisciplinary E-Research Journal

PEER REFREED & INDEXED JOURNAL

February - 2020 Special Issue – 224 (E)

RELEVANCE OF GANDHIAN THOUGHTS

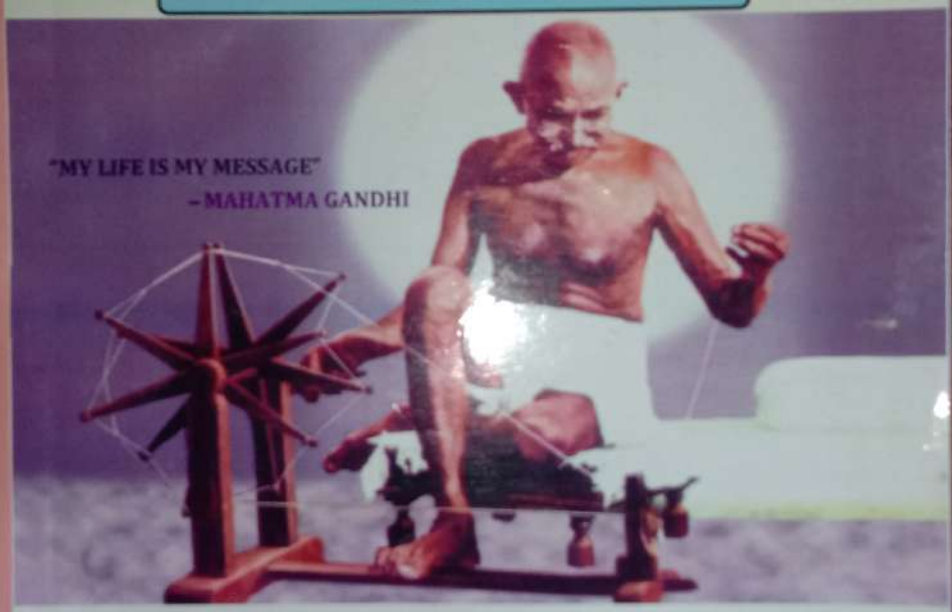

Guest Editor :
Dr. Mrs. M. V. Waykole
Principal,
Bhusawal Arts, Science and P.O. Nahata Commerce College, Bhusawal, Dist Jalgaon.

Executive Editor :
Dr. A. D. Goswami
Vice Principal,
Bhusawal Arts, Science and P.O. Nahata Commerce College, Bhusawal, Dist Jalgaon.

Chief Editor :
Dr. Dhanraj T. Dhangar
(Yeola)

This Journal is Indexed in :
- Scientific Journal Impact Factor (SJIF)
- Cosmos Impact Factor (CIF)
- Global Impact Factor (GIF)
- International Impact Factor Services (IIFS)

For Details Visit To : www.researchjourney.net

Swatidhan Publications

INTERNATIONAL RESEARCH FELLOWS ASSOCIATION

COSMOS IMPACT FACTOR

Search Journal | Search

HOME | INDEXED JOURNAL | SUGGEST JOURNAL | REQUEST IF | DOWNLOAD LOGO | REVIEWER PANEL

Category

- INDEXED JOURNAL
- SUGGEST JOURNAL
- JOURNAL IF
- REQUEST FOR IF
- DOWNLOAD LOGO
- CONTACT US

- SAMPLE CERTIFICATE
- SAMPLE EVALUATION SHEET

Journal Detail

Journal Name	**RESEARCH JOURNEY**
ISSN/EISSN	**2348-7143**
Country	**IN**
Frequency	**Quarterly**
Journal Discipline	**General Science**
Year of First Publication	**2014**
Web Site	www.rsearchjourney.net
Editor	**Prof. Dhanraj Dhangar & Prof. Gajaran Wankhede**
Indexed	**Yes**
Email	researchjourney 2014@gmail.com
Phone No.	**+91 7709752380**
Cosmos Impact Factor	**2015 : 3.452**

GIF
GLOBAL IMPACT FACTOR

News Updates Due to large number of application please allow to update your journal

Get Involved

- Home
- Evaluation Method
- Journal List
- Apply for Evaluator/Free Service
- Journal Search

Recently Added Journals

	Research Journey
ISSN	2348-7143
Country	India
Frequency	Quarterly
Year publication	2014-2015
Website	researchjournal.net
Global impact and Quality Factor	
2014	0.565
2015	0.676

Research Journey

SJIF 2019 :
6.625

Area : Multidisciplinary
Evaluated version : online

Previous evaluation SJIF
2018 : 6.428
2017 : 6.261
2016 : 6.087
2015 : 3.986

The journal is indexed in :

SJIFactor.com

Basic information

Main title	**Research Journey**
Other title (English)	Research Journey
Abbreviated title	
ISSN	2348-7143 (E)
URL	http://WWW.RESEARCHJOURNEY.NET
Country	India
Journal's character	Scientific
Frequency	Quarterly
License	Free for educational use
Texts availability	Free

Contact Details

Editor-in-chief	Prof. Dhanraj Dhangar
	M.G.V.'S ARTS & COMMERCE COLLEGE, YEOLA, DIST NASHIK
	India
Publisher	MRS. SWATI SONAWANE

SWATIDHAN PUBLICATIONS

Price : Rs. 800/-

For Details Visit To : www.researchjourney.net

'RESEARCH JOURNEY' International Multidisciplinary E- Research Journal
Impact Factor - (SJIF) - 6.625,
Special Issue 224 (E) : Relevance of Gandhian Thoughts
Peer Reviewed Journal
ISSN : 2348-7143
February-2020

महात्मा गांधी का राष्ट्रीय आंदोलन में योगदान 1915–1920
(खिलाफत एवं असइयोग आंदोलन के विशेष संदर्भ में)

प्रा. अनुपम आर. शर्मा
सहा.प्राध्यापक
श्री संत गाडगे बाबा हिंदी महाविद्यालय, भुसावल

प्रस्तावना :

भारतीय इतिहास में महात्मा गांधी का नाम परिचय का मोहताज नहीं है। राष्ट्रीय आंदोलन में उनके स्मरणीय योगदान के कारण ही वे 'Father of Nation' राष्ट्रपिता के नाम से संबोधित किए गए किंचित विवादास्पद भ्रांतियों के कारण उन्हें भारत विभाजन के संदर्भ में कुछेक इतिहासकार या लेखक जिम्मेदार मानते हैं किंतु यह व्यक्तिगत राय हो सकती है, वे सार्वजनिक रूप से सर्वसामान्य नेता थे। तिलक के अग्रगामी कहे जाते है, जो भारतीय इतिहास में लोकमान्य के रूप में इतिहास के लिए मील का पत्थर कहे जाते हैं। स्वराज्य की जो यात्रा तिलक द्वारा आरंभ हुई थी उस यात्रा को स्वराज्य से आजादी हासिल करने तक स्वर्णिम नेतृत्व मोहनदास करमचंद गांधी ने दिया। सुभाषचंद्र बोस द्वारा उन्हें 'महात्मा' कह कर संबोधित किया गया था। वास्तविकता में निःस्वार्थ रूप से देश की आजादी के लिए समर्पित हुए एवं आजादी का मार्ग प्रशस्त किया, वे पहले भारतीय है, जिन्होंने अपनी माँ से प्राप्त सत्य ज्ञान का प्रयोग राष्ट्रीय आंदोलन में करते हुए सत्याग्रह एवं अहिंसा के सिद्धांत और शांतिपूर्ण विरोध के द्वारा सारे विश्व एवं जनमानस का ध्यान भारतीय राजनीति एवं राष्ट्रीय आंदोलन की और आकर्षित किया।

राष्ट्रीय आंदोलन में प्रवेश :

महात्मा गांधी गोपालकृष्ण गोखले को अपना राजनीतिक गुरु और आदर्श मानते थे, उनका प्रथम राजनीतिक सफर दक्षिण अफ्रीका से प्रशस्त हुआ जहाँ कि वकालत की अपनी पढ़ाई लंदन से पास करने के पश्चात 1893 में सेठ अब्दुल्ला द्वारा भारतीय मजदूरों के साथ अंग्रेजों द्वारा किए जा रहे जुल्म एवं शोषण के खिलाफ मुकदमें की पैरवी के लिए गांधीजी को आमंत्रित किया था, वहाँ गांधी जी द्वारा 'एशियाई रजिस्ट्रेशन एक्ट' के खिलाफ सफलतम प्रतिरोध के द्वारा सत्याग्रह एवं अहिंसा का प्रयोग करते हुए अंग्रेज सरकार को घुटने टेकने को मजबूर कर दिया। ट्रान्सवाल यात्रा का ही परिणाम था कि **'रजिस्ट्रेशन एक्ट' एवं 'Poll Tax'** सरकार द्वारा रद्द किया गया। निसंदेह गांधीजी मानव के मूल अधिकारों के समर्थक थे। कट्टर राष्ट्रवादी ही नहीं अंतर्राष्ट्रीयवादी भी थे, उनका धर्म किसी पुस्तक स्थान पूजा का नहीं था वे सत्य एवं न्याय के पक्षधर थे जो समाज एवं सभ्यता का अनिवार्य अंग होता है। वे राजनीतिज्ञ ही नहीं संत थे।

संकल्पना :

गांधीजी के आलोचकों ने उन्हें 'राजनीतिक अराजकतावादी' भी कहा है क्योंकि उन्होंने ब्रिटिश सरकार की संवैधानिक प्रभुसत्ता को ललकारा था, वे उन्हे 'राजनीतिक ब्लैकमेलर' कह देते हैं, किंतु सत्य इस सोच से परे ही साबित होता है, वे मानवीय समाज की बुनियादी स्वतंत्रता एवं गुलामी के अंग्रेजी सत्ता सिद्धांतों के विरोधी थे, उन्होंने स्वयं कहा था कि, "गलत साधनों और धूर्ततापूर्व ढंग से तुरंत स्वतंत्रता प्राप्ति की अपेक्षा लंबे समय तक प्रतिक्षा अधिक अच्छा समझते है।"

उनके ही प्रयासों का परिणाम था कि भारतीय राष्ट्रीयता से दूर रहें एवं रक्तपात करने की जगह में सत्याग्रह के साक्षी बने। सर स्टेफर्ड किप्स ने स्वयं गांधीजी के लिए लिखा है, "हमारे विश्व में दूसरा अधिक महान एवं आध्यात्मिक नेता कोई नहीं हुआ।" रोम्या रोलां भी लिखते हैं कि, "गांधीजी ही केवल भारत के राष्ट्रीय इतिहास के ऐसे नायक थे, जिनकी किवदंती युगों तक प्रसिद्ध रहेगी..... उनके व्यक्तित्व का प्रकाश संपूर्ण विश्व तक फैला हुआ है।"

योगदान :

गांधीजी का भारतीय राजनीति में पदार्पण अहमदाबाद के मिल मजदूरों की हड़ताल के माध्यम से 1918 गुजरात से ही हुआ। यद्यपि पूँजीपति–मजदूरों के विवाद में पूँजीपति वर्ग के कुछ मित्र गांधीजी के होने के बावजूद भी वे मजदूरों के समर्थन में खड़े हुए। 1918 में हुए विरोध प्रदर्शन एवं गांधीजी के नेतृत्व के कारण मिल मजदूरों एवं पूँजीपतियों के मध्य समझौता कर लिया गया। जिसमें अंशतः मानवीय आधार पर मिल मजदूरों की माँग स्वीकार कर ली गई। वहीं दूसरी ओर 1917 चंपारण आंदोलन/सत्याग्रह हेतु पंडित राजेंद्र प्रसाद एवं इंदूलाल यग्निक व राजकुमार शुक्ल द्वारा महात्मा गांधी को बिहार के चंपारण में नेतृत्व हेतु आमंत्रित किया। गांधीजी द्वारा चंपारण पहुँचकर नील की खेती का विरोध कर रहे किसानों से बातचीत के पश्चात सत्याग्रह का निश्चय किया। गांधीजी के प्रवेश पर तत्कालीन कलेक्टर द्वारा निषेध घोषित किए जाने के बावजूद भी गांधीजी ने सत्याग्रह हेतु चंपारण में प्रवेश कर खेतिहर किसानों की दुर्दशा से सरकार को अवगत कराया, किंतु अंग्रेज व्यापारी एवं सरकार का रवैया समझौते का नहीं था, गांधी जी के प्रवेश से सरकार तिलमिला गई एवं प्रारंभिक गतिविधि के पश्चात सरकार की दखलंदाजी के बाद गांधीजी के सहयोग से नील खेती में लगे कृषक एवं अंग्रेज व्यापारियों के मध्य समझौता हुआ, साथ ही बढ़ी हुई लगान दरों को संशोधित करने सरकार सहमत हुई यह घटना गांधीजी के राजनीति में पदार्पण की ऐतिहासिक उपलब्धियों में महत्वपूर्ण स्थान रखती है।

1919 के प्रथम तिमाही बीती थी कि सरकार का रुख आक्रामक होने लगा था, भारत में प्रचलित कानूनों को अपर्याप्त बताते हुए भारत में बढ़ते राष्ट्रवाद को लेकर सरकार की चिंता रोलेट एक्ट द्वारा प्रस्तुत की गई थी। इस चिंता पूर्ति हेतु सिडनी रोलट की अध्यक्षता में जो कमेटी बनी उसने 'रौलेक्ट एक्ट' की अनुशंसा की जिसे महात्मा गांधी जी द्वारा 'बिना अपील बगैर वकील बगैर दलील' के कानून की संज्ञा दी एवं भारतीयों के रोष द्वारा 'काला कानून' एक स्वर में कह कर निंदा की। महात्मा गांधी मद्रास में थे, उन्होंने इस एक्ट के विरोध में शांतिपूर्ण अहिंसक आंदोलन की अपील की, विभिन्न पार्टी एवं भारतीयों द्वारा इस अपील का समर्थन अभूतपूर्व तरीके से किया। 30 अप्रैल 1919 में सत्याग्रह का निश्चय किया गया किंतु सरकार की तैयारियों को देखते हुए, 6 अप्रैल 1919 को हड़ताल, धरना, प्रदर्शन, जुलूस का आयोजन किया गया। सरकार द्वारा दमन किया किंतु प्रदर्शनकारी नहीं रुके महात्मा गांधी नेतृत्व हेतु दिल्ली जा रहे थे किंतु उन्हें वापस भेज दिया गया।

दूसरी घटना के रूप में जलियाँवाला ने सभी भारतीय एवं शीर्ष नेताओं को झकझोर कर रख दिया था। भारत में राष्ट्रीयतावादी प्रदर्शन बढ़ते जा रहे थे सरकारी दमन–चक्र रुकने का नाम नहीं ले रहा था, सरकार बर्बरता की सीमा पार किए जा रही थी वही देशव्यापी हड़ताल 6 अप्रैल 1919 के आह्वान के चलते पंजाब के राष्ट्रवादी नेता सैफुद्दीन किचलू एवं सत्यपाल की गिरफ्तारी को लेकर रोष व्याप्त हुआ। पंजाब में व्यवस्था एवं शांति के लिए माइकल ओ डॉयर को भेजा गया जो पहले ही बर्बरता के लिए कुख्यात था, उसने सार्वजनिक रूप से सभा तथा आयोजन एवं जुलूस पर प्रतिबंध लगा के स्थिति सुधारने का प्रयास किया किंतु प्रतिबंध के सूचना जनता के लिए सरकार

द्वारा प्रकाशित नहीं की गई, इसका खामियाजा 'जलियाँवाला बाग' के क्रुर हत्याकांड जो सरकार के कार्यों पर कलंक के रूप में देखने मिला। यह भारतीय इतिहास की अत्यंत वीभत्स एवं अमानवीय अंग्रेजी कृत्यों के साक्ष के रूप में भारतीय इतिहास में दर्ज हुआ। डॉ.हरिदास गुप्ता अपनी पुस्तक में लिखते हैं कि, "जलियाँवाला बाग अंग्रेजी सरकार की सोची समझी साजिश थी यहाँ तक लिखते हैं कि प्रतिबंध जो लगाए गए थे, सभा, जुलूस एवं हड़ताल पर वह केवल दिखावा था। सरकार द्वारा स्वयं जलियाँवाला बाग में आयोजन हेतु सिखों को सहयोग किया था।" बावजूद इसके कि यह शांतिपूर्व आयोजन था डायर द्वारा बिना चेतावनी के नरसंहार किया। महात्मा गांधी द्वारा तीखी आलोचना करते हुए सरकार पर प्रहार किया। महात्मा गांधी द्वारा 30 मार्च 1919 से 28 अप्रैल 1919 तक भारत में प्रथम सत्याग्रह का आह्वान किया, जो पूर्ण अहिंसक था सरकार असहाय–मूकदर्शक बनी देखती रही क्योंकि जनता कोई भी अवैधानिक कृत्य नहीं कर रही थी यहीं से जनता दमनकारी सरकार की नीतियों के खिलाफ गांधी जी के नेतृत्व में कदम से कदम मिलाकर चलने को तैयार हो गई।

भारतीय मुसलमानों को भारतीय राष्ट्रवादी गतिविधियों से जोड़ने का अभूतपूर्व अवसर खिलाफत के प्रश्न पर मिला। गांधीजी द्वारा इस अवसर पर राष्ट्रीय प्रतिरोध में खिलाफत को भी शामिल किया, मुद्दा कुछ इस प्रकार का था कि दमनकारी एवं ब्रिटिश सरकार अपनी नीतियों के कारण कुख्यात हो चुकी थी वही प्रथम विश्वयुद्ध में टर्की का शासन जो मुसलमान धार्मिक जगत में 'खलीफा' कहा जाता था उसके साथ ब्रिटेन एवं मित्र राष्ट्रों का असम्मानजनक व्यवहार एवं संभवतः मक्का–मदीना के पवित्र स्थलों का यूरोपियन के हाथों में जाना व्यक्त किया जा रहा था, इस अवसर पर भारत में प्रतिरोध बढ़ा मुस्लिम मौलाना मोहम्मद अली एवं मौलाना शौकत अली के नेतृत्व में विरोध करने लगे महात्मा गांधी द्वारा खिलाफत की आवाज भारतीय राष्ट्रीय कॉंग्रेस के माध्यम से बुलंद की एवं अंग्रेजों पर दबाव बढ़ाया यही कारण था कि भारतीय मुसलमान असहयोग आंदोलन में भी शामिल हुए। इसी अवसर पर असहयोग आंदोलन की शुरुआत भी मोहनदास के नेतृत्व में की गई।

1920 में नेतृत्व की कमी महसूस की जा रही थी। तिलक जी के देहावसान के सहज ही गांधीजी अपने प्रसिद्धी के पश्चात सर्वसामान्य नेता के रूप में उभरने लगे थे। गांधी जी के नेतृत्व से पहले भारत का राष्ट्रीय आंदोलन कुछ पढ़े–लिखे शिक्षित भारतीयों के हाथों में था किंतु गांधीजी ने इस नेतृत्व को लेकर इसे व्यापक दायरे तक फैला दिया। अब यह आंदोलन का रूप लेकर जन–जन तक फैलने लगा था। अब गांधीजी के नेतृत्व में भारतीय चेतना शीर्ष तक पहुँचने लगी थी। अंग्रेजी सरकार को उन्होंने 'शैतानी राज्य' की संज्ञा देकर कहा था कि, " ब्रिटिश सरकार एक दैत्य की तरह है उसके साथ सहयोग करना संभव नहीं क्योंकि ऐसा करने से जलियाँवाला एवं खिलाफत की गलतियाँ दोहराई जाएगी। अब केवल एक ही रास्ता है ऐसी सरकार के साथ पूर्णतः असहयोग।" 1920 के कलकत्ता अधिवेशन में गांधी जी के नेतृत्व में असहयोग आंदोलन का प्रस्ताव कांग्रेस द्वारा स्वीकार कर लिया गया। "गांधी जी ने कहा, स्वराज हमारा उद्देश्य है, यदि संभव हो तो ब्रिटिश सरकार के अंतर्गत और यदि आवश्यक हो तो ब्रिटिश साम्राज्य के बाहर।" गांधीजी द्वारा 20 सूत्री कार्यक्रम के अंतर्गत असहयोग आंदोलन की आधारशिला रखी। एक अद्भुत एवं अभूतपूर्व आंदोलन के रूप में प्रस्फुटित हुआ जिसमें जनता का उत्साह देखते बनता था। नेहरू के शब्दों में, "हमारे जोश हमारा उत्साह और हमारे आशावाद का ठिकाना न था..... हमारी आंखों के सामने तस्वीर बदलती जा रही थी और जैसा कि हमारा विश्वास था हिंदुस्तान की आजादी नजदीक आ

रही थी।" इतिहासकार कुपलैण्ड लिखता है कि, "गांधी जी ने वो काम कर दिया जो तिलक भी नहीं कर पाए, उन्होंने इस आंदोलन को राष्ट्रीय आंदोलन में बदल दिया।" इसे स्वतंत्रता का लक्ष्य दिया अभी तक यह लक्ष्य नगरों तक सीमित था गांधीजी के जादुई नेतृत्व ने इसे गाँव–गाँव तक पहुँचा दिया। उन्होंने जन आंदोलन को राष्ट्रीय आंदोलन बना दिया। उनका चमत्कारिक व्यक्तित्व था कि उन्होंने शीघ्र ही अंग्रेजी सरकार को भारतीयों की संगठित शक्ति का एहसास कराया।

मूल्यांकन :

अनेक दुर्बलताओं के बाद भी असहयोग आंदोलन गांधीजी के नेतृत्व में विराट स्वरूप में दिखाई दिया। यह पूर्णतः अहिंसक, शांत, शांतिपूर्वक, जुलूस हड़ताल, धरने एवं बहिष्कार के तत्वों को शामिल करके गांधीजी द्वारा इसका सफलतम आयोजन किया था। सरकार झुकने को बाध्य हुई थी कि चौरा–चौरी की हिंसक घटना 5 जनवरी 1922 के पश्चात् गांधीजी द्वारा हिंसा के प्रवेश की भर्त्सना करते हुए आंदोलन स्थगित करने की घोषणा से सारा भारत स्तब्ध हो गया, कि स्वराज्य के लक्ष्य तक पहुँच कर आंदोलन वापसी की घोषणा, आंदोलन में शामिल जनता से विश्वासघात था। किंतु गांधीजी अपने सिद्धांतों से परे टस से मस नहीं हुए एवं आंदोलन बगैर लक्ष्य प्राप्ति समाप्त कर दिया गया। जवाहरलाल नेहरू एवं सुभाषचंद्र बोस जैसे नेताओं ने इस निर्णय को गैर वाजिब बताते हुए आलोचना प्रस्तुत की।

गांधीजी का व्यक्तित्व दृढ़ संकल्पित था वे अपने सिद्धांतों के पक्के थे, वे सत्य, अहिंसा के सिद्धांतों के कट्टर समर्थक थे, पूरे राष्ट्रीय आंदोलन में वह इस सिद्धांत से परे दिखाई नहीं देते हैं, वे महान राष्ट्रीयतावादी थे, उन्होंने अपना व्यक्तिगत जीवन त्याग कर भारतीय राष्ट्र को समर्पित कर दिया अपना सर्वस्व न्यौछावर कर देने के कारण ही महात्मा कहे गए। निश्चित ही उनका जीवन राष्ट्र को समर्पित था इसलिए उन्हें राष्ट्रपिता संम्बोधन दिया गया।

संदर्भ ग्रंथ :

1. वर्मा दीनानाथ– आधुनिक भारत का इतिहास
2. डॉ. खुराना के. एल.– भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन
3. झा एंड श्रीमाली–आधुनिक भारतीय इतिहास
4. विपिन चंद्र – भारतीय स्वतंत्रता का इतिहास
5. कुपलैण्ड आर – इंडियन पॉलिटिक्स
6. डॉ. ताराचंद– भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन का इतिहास